

मोहन राकेश

(जन्म : सन् 1925 ई., निधन : सन् 1972 ई.)

मोहन राकेश का जन्म पंजाब के अमृतसर में हुआ था। इनका असली नाम तो मदन मोहन गुगलानी था। उनकी दीदी ने मदन मोहन राकेश नाम रखा था। बाद में मोहन राकेश नाम स्थायी हुआ। मोहन राकेश हिन्दी साहित्य के अच्छे नाट्यकार, उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में अपना नाम अमर कर गये हैं। इन्होंने डायरी, संस्मरण, जीवनी, निबंध, पत्रकारिता तथा अनुवाद के क्षेत्र में भी ठोस योगदान दिया है। नाटक में 'आषाढ़ का एक दिन' बहुत ही विख्यात और चर्चित नाटक रहा है।

नाटक : 'आधे अधूरे', 'लहरों के राजहंस', 'आषाढ़ का एक दिन', **एकांकी :** 'अंडे के छिलके', 'बीज नाटक', 'आईने के सामने' एवं 'सारा आकाश', 'आखरी चट्टान तक' उनकी गद्य रचनाएँ हैं।

यहाँ पर 'आषाढ़ का एक दिन' से केवल एक अंश ही 'कालिदास का प्राणी प्रेम' शीर्षक से प्रस्तुत किया गया है। नाटक के दो प्रमुख पात्र हैं, मल्लिका और कालिदास। कालिदास बाण से घायल हरिणशावक को बचा लेता है। नाट्यकार ने यह कहना चाहा है कि अगर हम प्राण दे नहीं सकते तो किसी का प्राण लेने का अधिकार भी हमें नहीं है। 'मारने वाले से बचानेवाला महान है।' वस्तुतः दन्तुल ने शिशु हरिणशावक को घायल कर दिया है इसीलिए इस प्रकार का व्यंग-बाण लेखक उस पर ही चलाते हैं। अतः यहाँ पर जीवदया की बात बताकर कालिदास का प्राणीप्रेम प्रकट किया है। पशु-पक्षी हमारे मित्र हैं। अतः उनका हनन नहीं होना चाहिए।

पर्यावरण की रक्षा के लिए पशु-पक्षियों का अनन्य महत्त्व है। मानव जीवन विकास में प्राणियों का बड़ा योगदान है। प्राणी मानव के साथी हैं इसीलिए हमें उनका रक्षण करना चाहिए।

(कालिदास एक हरिणशावक को बाँहों में लिये पुचकारता हुआ आता है। हरिणशावक के शरीर से लहू टपक रहा है।)

कालिदास : हम जिँएँगे हरिणशावक ! जिँएँगे न ? एक बाण से आहत होकर हम प्राण नहीं देंगे। हमारा शरीर कोमल है तो क्या हुआ ? हम पीड़ा सह सकते हैं। एक बाण प्राण ले सकता है तो उँगलियों का कोमल स्पर्श प्राण दे भी सकता है। हमें नये प्राण मिल जाएँगे। हम कोमल आस्तरण पर विश्राम करेंगे। हमारे अंगों पर घृत का लेप होगा। कल हम फिर वनस्थली में घूमेंगे। कोमल दूर्वा खाएँगे न ? खाएँगे न ?

(मल्लिका अपने को सहेजकर द्वार की ओर जाती है।)

मल्लिका : यह आहत हरिणशावक ?... यहाँ ऐसा कौन व्यक्ति है जिसने इसे आहत किया ? क्या दक्षिण की तरह यहाँ भी... ?

कालिदास : आज गाँव-प्रदेश में कई नयी आकृतियाँ देख रहा हूँ।

(झरोखे के पास जाकर आसन पर बैठ जाता है।)

राज्य के कुछ कर्मचारी आये हैं।

(हरिणशावक को वक्ष से सटाकर थपथपाने लगता है।)

हम सोएँगे ? हाँ, हम थोड़ी देर सो लेंगे तो हमारी पीड़ा दूर हो जाएगी। परंतु उससे पहले हमें थोड़ा दूध पी लेना है। मल्लिका थोड़ा दूध हो तो किसी भाजन में ले आओ।

मल्लिका : माँ ने दूध औटाकर रखा है। देखती हूँ।

(चूल्हे के निकट रखे बरतनों के पास जाकर देखने लगती है।)

अभी-अभी दो-तीन राज कर्मचारियों को हमने घोड़े पर जाते देखा है। माँ कहती है कि जब भी ये लोग आते हैं, कोई न कोई अनिष्ट होता है। वर्षा के रोमांच के बाद मुझे यह सब बहुत विचित्र लगा।

(दूध का बरतन उठाकर दूध खुले बरतन में उड़ेलने लगती है।)

माँ आज बहुत रुष्ट है।

(कालिदास हरिणशावक को बाँहों से झुलाने लगता है।)

- कालिदास** : हम पहले से सुखी हैं । हमारी पीड़ा धीरे-धीरे दूर हो रही है । हम स्वस्थ हो रहे हैं । न जाने इसके रूई जैसे कोमल शरीर पर उससे बाण छोड़ते बना कैसे ? वह कुलांच भरता मेरी गोदी में आ गया । मैंने कहा, तुझे वहाँ ले चलता हूँ जहाँ तुझे अपनी माँ की-सी आँखें और उसका-सा ही स्नेह मिलेगा ।
(मल्लिका की ओर देखता है । मल्लिका दूध लिए पास आ जाती है ।)
- मल्लिका** : सच, माँ आज बहुत रुष्ट हैं । माँ को अनुमान हो गया कि वर्षा में मैं तुम्हारे साथ थी, नहीं तो इस तरह भीगकर न आती । माँ को अपवाद की बहुत चिंता रहती है ।
- कालिदास** : दूध मुझे दे दो और इसे बाँहों में ले लो ।
(दूध का भाजन उसके हाथ से ले लेता है । मल्लिका हरिणशावक को बाँहों में लेकर उसका मुँह दूध के निकट ले जाती है । कालिदास भाजन को उसके और निकट कर देता है ।) हम दूध नहीं पीएँगे ? नहीं हम ऐसा हठ नहीं करेंगे । हम दूध अवश्य पीएँगे ।
(राजपुरुष दन्तुल ड्योढ़ी से आकर द्वार के पास रुक जाता है । क्षणभर वह उन्हें देखता रहता है । कालिदास हरिण को मुँह से दूध पिला देता है ।)
ऐसे...ऐसे ।
(दन्तुल बढ़कर उनके निकट आता है ।)
- दन्तुल** : दूध पिलाकर इसके कोमल मांस को और कोमल कर लेना चाहते हो ?
(कालिदास और मल्लिका चौंककर उसे देखते हैं । मल्लिका हरिणशावक को लिये थोड़ा पीछे हट जाती है । कालिदास दूध का भाजन आसन पर रख देता है ।)
- कालिदास** : जहाँ तक मैं जानता हूँ हम लोग परिचित नहीं हैं । तुम्हारा एक अपरिचित घर में आने का साहस कैसे हुआ ?
(दन्तुल एक बार मल्लिका की ओर देखता है फिर कालिदास की ओर ।)
- दन्तुल** : कैसी आकस्मिक बात है कि ऐसा ही प्रश्न मैं तुमसे पूछना चाहता था । हमारा कभी का परिचय नहीं फिर भी मेरे बाण से आहत हरिण को उठा ले आने में तुम्हें संकोच नहीं हुआ ? यह तो कहो कि द्वार तक रक्त बिन्दुओं के चिह्न बने हैं, अन्यथा इन बादलों से घिरे दिनों में मैं तुम्हारा अनुसरण कर पाता ?
- कालिदास** : देख रहा हूँ कि तुम इस प्रदेश के निवासी नहीं हो ।
(दन्तुल व्यंग्यात्मक हँसी हँसता है ।)
- दन्तुल** : मैं तुम्हारी दृष्टि की प्रशंसा करता हूँ । मेरी वेश-भूषा ही इस बात का परिचय देती है कि मैं यहाँ का निवासी नहीं हूँ ।
- कालिदास** : मैं तुम्हारी वेश-भूषा को देखकर नहीं कह रहा ।
- दन्तुल** : तो क्या मेरे ललाट की रेखाओं को देखकर ? जान पड़ता है चोरी के अतिरिक्त सामुद्रिक का भी अभ्यास करते हो ।
(मल्लिका चोट खायी-सी कुछ आगे आती है ।)
- मल्लिका** : तुम्हें ऐसा लांछन लगाते लज्जा नहीं आती ?
- दन्तुल** : क्षमा चाहता हूँ देवि ! परंतु यह हरिणशावक, जिसे बाँहों में लिये हैं, मेरे बाण से आहत हुआ है । इसलिए यह मेरी संपत्ति है । मेरी संपत्ति मुझे लौटा तो देंगी ?
- कालिदास** : इस प्रदेश में हरिणों का आखेट नहीं होता राजपुरुष । तुम बाहर से आये हो, इसलिए इतना ही पर्याप्त है कि हम इसके लिए तुम्हें अपराधी न मानें ।
- दन्तुल** : तो राजपुरुष के अपराध का निर्णय गाँववासी करेंगे । ग्रामीण युवक, अपराध और न्याय का शब्दार्थ भी जानते हो ।
- कालिदास** : शब्द और अर्थ राजपुरुषों की संपत्ति है, जानकर आश्चर्य हुआ ।
- दन्तुल** : समझदार व्यक्ति जान पड़ते हो । फिर भी नहीं जानते कि राजपुरुषों के अधिकार बहुत दूर तक आते हैं । मुझे देर हो रही है । यह हरिणशावक मुझे दे दो ।
- कालिदास** : यह हरिणशावक इस पार्वत्य-भूमि की संपत्ति है, राज-पुरुष ! और इसी पार्वत्य भूमि के निवासी हम इसके सजातीय हैं । तुम यह सोचकर भूलकर रहे हो कि हम इसे तुम्हारे हाथ में सौंप देंगे । मल्लिका, इसे अंदर ले जाकर तल्प पर या किसी आस्तरण पर...(अम्बिका सहसा अंदर से आती है ।)

- अम्बिका** : इस घर के तल्प और आस्तरण हरिणशावकों के लिए नहीं है ।
- मल्लिका** : तुम देख रही हो माँ... !
- अम्बिका** : हाँ, देख रही हूँ । इसलिए तो कह रही हूँ । तल्प और आस्तरण मनुष्यों के सोने के लिए हैं, पशुओं के लिए नहीं ।
- कालिदास** : इसे मुझे दे दो, मल्लिका !
(दूध का भाजन नीचे रख देता है और बढ़कर हरिणशावक को अपनी बाँहों में ले लेता है ।) इसके लिए मेरी बाँहों का आस्तरण ही पर्याप्त होगा । मैं इसे घर ले जाऊँगा । (द्वार की ओर चल देता है ।)
- दन्तुल** : और राजपुरुष दन्तुल तुम्हें ले जाते देखता रहेगा ।
- कालिदास** : यह राजपुरुष की रुचि पर निर्भर करता है ।
(बिना उसकी ओर देखे ड्योढ़ी में चला जाता है ।)
- दन्तुल** : राजपुरुष की रुचि-अरुचि क्या होती है, संभवतः इसका परिचय तुम्हें देना आवश्यक होगा ।
(कालिदास बाहर चला जाता है । केवल उसका शब्द ही सुनाई देता है ।)
- कालिदास** : संभवतः ।
- दन्तुल** : संभवतः ?
(तलवार की मूठ पर हाथ रखे उसके पीछे जाना चाहता है । मल्लिका शीघ्रता से द्वार के सामने खड़ी हो जाती है ।)
- मल्लिका** : ठहरो राजपुरुष ! हरिणशावक के लिए हठ मत करो । तुम्हारे लिए प्रश्न अधिकार का है, उनके लिए संवेदना का । कालिदास निःशस्त्र होते हुए भी तुम्हारे शस्त्र की चिंता नहीं करेंगे ।
- दन्तुल** : कालिदास ? तुम्हारा अर्थ है कि मैं जिनसे हरिणशावक के लिए तर्क कर रहा था वे कवि कालिदास हैं ?
- मल्लिका** : हाँ-हाँ । परंतु तुम यह कैसे जानते हो कि कालिदास कवि हैं ?
- दन्तुल** : कैसे जानता हूँ ! उज्जयिनी की राज्यसभा का प्रत्येक व्यक्ति 'ऋतुसंहार' के लेखक कवि कालिदास को जानता है ।
- मल्लिका** : उज्जयिनी की राज्यसभा का प्रत्येक व्यक्ति उन्हें जानता है ?
- दन्तुल** : सम्राट ने स्वयं ऋतुसंहार पढ़ा और उसकी प्रशंसा की है । इसलिए आज उज्जयिनी का राज्य 'ऋतुसंहार' के लेखक का सम्मान करना और उन्हें राजकवि का सम्मान देना चाहता है । आचार्य वररुचि इसी उद्देश्य से उज्जयिनी से यहाँ आए हैं ।
(मल्लिका सुनकर स्तम्भित-सी हो रहती है ।)
- मल्लिका** : उज्जयिनी का राज्य उन्हें सम्मान देना चाहता है ? राजकवि का आसन.... ?
- दन्तुल** : मुझे खेद है मैंने उनके साथ अशिष्टता का व्यवहार किया । मुझे जाकर उनसे क्षमा माँगनी चाहिए ।

शब्दार्थ

हरिणशावक हिरण का बच्चा, मृगछौना आस्तरण बिछौना, गद्दा कुलांच चौकड़ी भरना घृत: घी भाजन पात्र, बरतन अनुसरण पीछे-पीछे चलना सामुद्रिक हस्तरेखा विद्या, ज्योतिष आखेट शिकार पार्वत्य पर्वतीय अपवाद निंदा व्यथित दुःखी तल्प शय्या, अटारी

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

- (1) हरिणशावक इनमें से किसके बाणों से घायल हुआ था ?
(अ) कालिदास (ब) मल्लिका (क) दन्तुल (ड) अम्बिका
- (2) कालिदास हरिणशावक के अंगों पर का लेप लगाना चाहता है ।
(अ) हवाई (ब) तेल (क) मरहम (ड) घृत

(3) 'मेरी वेश-भूषा ही इस बात का परिचय देती है कि मैं यहाँ का निवासी नहीं हूँ।' – यह वाक्य कौन किस से कहता है ?

(अ) कालिदास दन्तुल से (ब) दन्तुल कालिदास से (क) मल्लिका दन्तुल से (ड) दन्तुल मल्लिका से

(4) उज्जयिनी की राज्यसभा का प्रत्येक व्यक्ति कालिदास को किसलिए जानता है ?

(अ) 'ऋतुसंहार' के लिए

(ब) 'गीतसंहार' के लिए

(क) 'संगीतसंहार' के लिए

(ड) 'नाट्यसंहार' के लिए

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) कालिदास कौन थे ?

(2) हिरणशावक किसके बाणों से घायल हुआ था ?

(3) कालिदास हिरण को कहाँ ले गये ?

(4) अंत में दन्तुल ने कालिदास को कैसे पहचाना ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) माँ के रुष्ट होने के पीछे मल्लिका क्या अनुमान करती है ?

(2) दन्तुल कौन था ? वह मल्लिका के घर कैसे पहुँचा ?

(3) मल्लिका ने दन्तुल को हिरणशावक के लिए हठ न करने के लिए क्यों कहा ?

(4) कालिदास दन्तुल को अपराधी न मानने के लिए क्या तर्क देता है ?

(5) उज्जयिनी की राजसभा कवि कालिदास का सम्मान किस तरह करना चाहती है ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) घायल हिरणशावक को बचाने के लिए कालिदास ने क्या-क्या किया ?

(2) कालिदास हिरणशावक को क्यों बचाना चाहते थे ?

(3) हिरणशावक के लिए कालिदास और दन्तुल के बीच में हुए संवाद को अपने शब्दों में लिखिए ?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) तुम्हारे लिए प्रश्न अधिकार का है, उनके लिए संवेदना का।

(2) यह हिरणशावक पार्वत्य-भूमि की संपत्ति है, राजपुरुष और इसी पार्वत्य-भूमि के निवासी हम इसके सजातीय हैं।

6. शब्द का अर्थ बताकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

आस्तरण, रुष्ट, दूर्वा, आखेट

7. विशेषण बनाइए :

शरीर, गाँव, प्रदेश, दिन, पीड़ा

8. भाववाचक संज्ञा बनाइए :

कोमल, बहुत, रुष्ट

9. दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए :

लहू, हरिण, ऋतु, दूध

10. सविग्रह समास भेद बताइए :

अनुसरण, हिरण शावक, प्रतिदिन, निःशस्त्र

योग्यता विस्तार

● 'जीवदया' पर निबंध लिखिए।

● इस नाट्यांश का वर्गखंड में मंचन कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

● कालिदास के नाटकों में से किसी एक नाटक की जानकारी विद्यार्थियों को दें।

●